14

लोक चित्रकला

Folk Paintings

14.0 भूमिका

जो मन से सहज स्वाभाविक रूप से प्रस्फुरित हो और दूसरे के मन तक पहुंचे वही कला है और 'कला अभिव्यक्ति' मानव का जन्मजात गुण है। मानव अपने–आपको कला से कभी भी अछूता नहीं रख सकता है। लोक कला का कलाकार यद्यपि एक आम इंसान है लेकिन उसने कल्पना का आश्रय लेकर अपने मन के आवेगों को लोक कला के द्वारा दिखाया है। साथ ही लोक कला की ख्याति को चरम सीमा तक पहुंचाया है। लोक कला के द्वारा उसने जहाँ अपने जीवन को सरस एवं रंगीन बनाया, वहीं अपने अंदर मानसिक सुख और सौन्दर्य बोध को विकसित होते अनुभव किया है। इस लोक कलाकार ने रेखा, बिन्दु और प्रतीकों के द्वारा, स्थानीय व सरलता से उपलब्ध सामग्री तथा प्राकृतिक रंगों के माध्यम से ऐसी लोक कला का सृजन किया है जिसने धरती से जुड़ कर भी आकाश जैसी ऊंचाइयों को छुआ है।

आप सबसे पहले जानना चाहेंगे कि लोक कला के लिए प्रयुक्त प्राकृतिक रंग क्या हैं? उनका निर्माण कैसे होता है? तथा अन्य साधन सामग्री क्या है?

लोक कला का कलाकार घरेलू सामग्री एवं स्थानीय साधनों पर ही निर्भर रहा है। चित्र में बारीक एवं सूक्ष्म रेखाएं खींचने के लिए बांस के पतले तिनके का प्रयोग किया तथा बड़े हिस्सों में रंग भरने के लिए एवं मोटी रेखाएं खींचने के लिए वे इसी बाँस के तिनके के आगे कपड़े का एक टुकड़ा लपेट लेते थे।

लोक चित्रों को बनाने में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया गया है जिनको बनाने की प्रक्रिया भी कम दिलचस्प नहीं है। जैसे नारंगी रंग हरसिंगार के फूलों से बनता है। फूलों को धूप में भली–भांति सुखाकर पानी में उबाला जाता है। उसके बाद उसमें गोंद मिला कर कपड़े से छान लिया जाता है। लाल रंग चुकंदर से बनता है। चुकंदर को कूटकर सुखा लिया जाता है। उसके बाद उसे उबाल कर उसमें गोंद मिलाया जाता है। ओड़हुद के फूलों से हरा रंग तैयार होता है। उन्हें भी सूखा लिया जाता है फिर उसमें नींबू, फिटकरी व गोंद मिलाकर उबाला जाता है। काला रंग गुड़ और जंग लगे लोहे से तैयार होता है। गुड़ के अंदर जंग लगे लोहे को लगभग दस दिन रखा जाता है फिर उसको उबाल कर उसमें से काला रंग निकाला जाता है। जामुन के फल से आसमानी रंग तैयार किया जाता है तो सूखे अनार के छिलकों से सुनहरी रंग तैयार किया जाता है। उसमें फिटकरी डालकर लगभग 48 घंटों तक उबाला जाता है। हल्दी से भी पीला रंग मिलता है। (विशेषः– प्रत्येक रंग में गोंद मिलाने से उसकी पकड़ कपड़े या कागज पर पक्की हो जाती है।)

काली घाट पेंटिंग

14.1 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आप

- पाठ में उल्लिखित लोकचित्रकला की शैली का वर्णन कर सकेंगे।
- लोक कला बनाने की विधि तथा साधनों के बारे में बता सकेंगे।
- इन चित्रों के शैलीगत अन्तर को बता सकेंगे।
- विभिन्न विख्यात लोकचित्र कला शैलियों के विकास के स्थानों की पहचान कर सकेंगे।

14.2 काली घाट पेंटिंग (बंगाल)

सामान्य परिचय

यह कहना युक्तिसंगत होगा कि सारे बंगाल प्रदेश का पर्याय काली घाट के लोकचित्र बन गए हैं। प्रस्तुत चित्र में एक राजसी व्यक्ति को कान साफ करने वाले की सेवाएं लेते दिखाया गया है। इस चित्र में दो मानव आकृतियाँ दिखाई गई हैं। इन दोनों की वेशभूषा ही उनके सामाजिक स्तर की ओर संकेत कर रही हैं। कुर्सी पर बैठा राजा शाल धारण किए है तो साथ खड़ा सेवक धोती पहने दिखाया गया है। इस चित्र की यह विशेषता है कि चित्र सपाट पृष्ठभूमि पर बना है जिसमें दीवार या फर्श जैसा कोई विभाजन नहीं दिखाया गया है।

रंगों में काला, लाल, पीले रंग का प्रयोग हुआ है। चेहरे एवं शरीर में मूलतः सफेद रंग की प्रधानता है। अंग गोलाकार हैं।

काली घाट के चित्रों में छाया–प्रकाश का अंकन एक विशिष्ट गुण के रूप में हुआ है। (यह गुण हमको अधिकतर विदेशी चित्रों में देखने को मिलता है।) इसी गुण विशेष के कारण प्रस्तुत चित्र में गोलाई, मोटाई एवं उभार का आभास होता है। इस चित्र की एक अन्य विशेषता है–गहने! विशेष रूप से कानों में डाले गए बड़े–बड़े गोलाकार कुंडल जिनमें आवश्यक रूप से दो मोती भी दिखाए गए हैं। इन कुंडलों का बड़ा आकार चित्र के आकर्षण का केन्द्र बन पड़ा है। सम्पूर्ण चित्र का रेखांकन बड़ा सरल एवं आकर्षक बन पड़ा है।

पाठगत प्रश्न (14.2)

रिक्त स्थान में सही शब्द पर (√) का चिन्ह लगाएं।

1. काली घाट के चित्र ..... (बंगाल/मध्य) प्रदेश के हैं।
2. पृष्ठभूमि को ..... (सपाट/दीवारों) फर्श में विभाजित दिखाया गया है।
3. ..... (हरा/लाल) रंग का प्रयोग चित्र में हुआ है।
4. कानों के ..... (कुंडल/माला) चित्र के आकर्षण के केन्द्र हैं।
5. राजा ..... (नाई/कान) साफ करने वाले की सेवाएं ले रहा है।

कलमकारी
(आंध्र प्रदेश)

14.3 कलमकारी (आंध्रप्रदेश)

सामान्य परिचय

आंध्रप्रदेश के दो गांव मासुलीपटनम तथा श्रीकलाहस्ती, कलमकारी चित्र के दो प्रमुख केन्द्रस्थल माने जाते हैं। यह चित्रकारी कपड़े पर बाटिक तथा छपाई तकनीक से होती है। कलम जैसे एक साधन के अन्दर पिघला हुआ मोम रखकर रूपरेखा बनाई जाती है। इसलिये इसे कलमकारी कहा जाता है। इस में वनस्पति से प्राप्त रंगों का प्रयोग होता है।

"जीवनवृक्ष" चित्र कलमकारी शैली का एक उत्तम उदाहरण है। पारम्परिक भारतीय नक्काशी की रूपरेखा द्वारा यह चित्र कपड़े पर परदे के लिये बनाया गया है। नक्काशी में पेड़ की शाखा–प्रशाखायें तथा पत्तियों के साथ कई चिड़ियाओं को दर्शाया गया है। इनमें दो मयूर भी शामिल हैं। इन प्रतीकात्मक रूपाकारों के स्रोत प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज के विचार दर्शन में मिलते हैं।

पाठगत प्रश्न (14.3)

वाक्य पूरा करो–

(1) आंध्रप्रदेश के दो गांव ..... तथा ..... कलमकारी चित्र के दो प्रमुख केन्द्रस्थल हैं।

(2) यह चित्रकारी कपड़े पर ..... तथा ..... तकनीक से होती है।

(3) "जीवनवृक्ष" चित्र में .... नक्काशी का प्रयोग किया गया।

(4) नक्काशी में पेड़ की ....को दर्शाए गए।

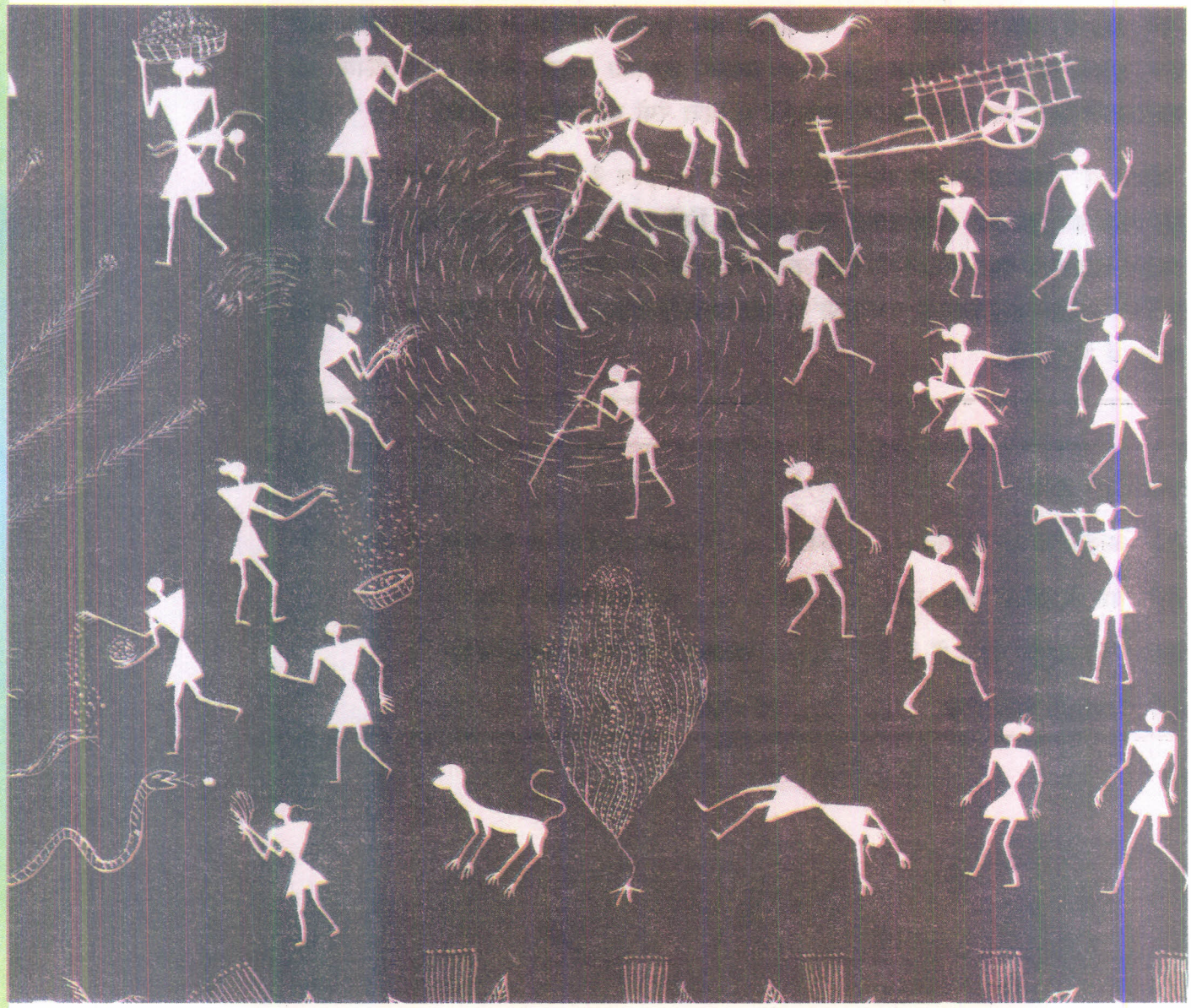

वरली (महाराष्ट्र)

14.4 वरली पेंटिंग (महाराष्ट्र)

सामान्य परिचय

यदि यह कहा जाए कि महाराष्ट्र की यह लोककला अकेले **'जीव्या सोमा मासे'** नामक लोक कलाकार के कंधों का आश्रय लेकर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति तक पहुंची तो अतिशयोक्ति न होगा। 1974 तक भारत में अपनी पहचान बनाते–बनाते ही यह लोक कला सारी दुनिया में प्रसिद्ध हो गई।

इस चित्र में मानव की रोजमर्रा जिंदगी को दर्शाया गया है। **'जीव्या सोमा मासे'** द्वारा बनाया गया यह चित्र उच्चकोटि की कलाकृति बन गया है। मानव आकृति की रचना दो त्रिभुज और कुछ रेखाओं द्वारा की गई है। किस प्रकार सरल आकृतियों द्वारा उत्कृष्ट भावनाओं की गहराई तक अनुभूति हो सकती है। इस चित्र से यही तथ्य प्रकट होता है। लगता है कि कलाकार का मुख्य उद्देश्य जनसाधारण के क्रिया–कलापों को दर्शाना है न कि धार्मिक या आध्यात्मिक अनुष्ठान दिखाना। चित्र में पशु जगत एवं वनस्पति जगत का समावेश बताता है कि मानव का इनसे अटूट संबंध रहा है। एक रंग की सपाट पृष्ठभूमि पर दूसरे रंग से सम्पूर्ण चित्र बना है। किसी ऐसे अवसर को चित्र द्वारा दर्शाया गया है जिसमें साँपों को आहार अर्पित किया जाता है अर्थात् जीवन में पशुओं के महत्व एवं आवश्यकता को दिखाया गया है।

पाठगत प्रश्न (14.4)

प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दो:–

(1) चित्र में कौन–कौन से पशु दिखाए गए हैं?

(2) मानवआकृति को किस के द्वारा बनाया गया है?

(3) इस चित्र के लोक कलाकार का नाम लिखो।

(4) इस चित्र में प्रयोग हुए मुख्य रंगों के नाम बताओ।

फड़ (राजस्थान)

14.5 फड़ (राजस्थान)

सामान्य परिचय

हल्के रंग की सपाट पृष्ठभूमि पर पूरा चित्र बनाया गया है। यह चित्र बहुत बड़े चित्र का एक भाग है और इस भाग में राजस्थानी स्त्रियों एवं पुरूषों के विभिन्न क्रियाकलापों को दिखाया गया है। इसलिए यह चित्र पूरा चित्र न होकर पूजा, त्यौहार, योद्धा, सवार, राजदरबार जैसी अनेक गतिविधियों को दर्शाने वाले अनेक भागों में बंटा हुआ है। इस चित्र में फिर भी सम्पूर्ण चित्र का प्रवाह दृष्टिगोचर होता है। हम यूं भी कह सकते हैं कि दर्शक की दृष्टि को बांध रखने में यह चित्र पूर्णतः सफल हुआ है। रंगों में चटक लाल, पीला, हरा, काला, सफेद प्रयोग किया गया है लेकिन लाल रंग की बहुलता है। चित्र में ऊँट का चित्रांकन बताता है कि वह राजस्थान के जन–मानस का अटूट भाग है। ऊँट के अलावा हाथी, घोड़े, पशु, पेड़ों का नयनाभिराम एवं अलंकारिक रूप दर्शाया गया है।

सभी आकृतियां राजस्थान की पारम्परिक एवं विशिष्ट वेशभूषा धारण किये हैं। पुरूषों के सिर पर पगड़ी, कमर बंध, साफा तो स्त्रियों को चोली–लहंगा, दुपट्टा ओढ़े दिखाया गया है। स्त्री एवं पुरूष दोनों ने गहने पहने हुए हैं तथा स्त्रियों के माथे पर दिखाया गया "बोरला" राजस्थान की विशेष पहचान है। मानव आकृतियों के एक चश्म–चेहरे दिखाए गए हैं। आकृतियां सरल किंतु आनुपातिक रूप से छोटी हैं। रेखाओं की मोटाई एक–सी बनाई गई है। राजस्थानी भवन–निर्माण कला का एक गुण है 'झरोखा' जोकि इस चित्र में जगह–जगह दिखाया गया है।

पाठगत प्रश्न (14.5)

वाक्य पूरा करो:

(1) चित्र में ..... विभिन्न गतिविधियों को दिखाया गया है।

(2) चित्र में चटक ..... रंग प्रयोग किए हैं।

(3) राजस्थानी स्त्री एवं पुरूषों ने ..... धारण की हुई है।

(4) .....पशुओं का अलंकारिक एवं नयनाभिराम रूप दिखाया गया है।

(5) सभी मानव आकृतियाँ .....एवं ..... से छोटी बनी है।

मधुबनी (मिथिला, बिहार)

14.6 मधुबनी (मिथिला, बिहार)

बिहार की यह लोक कला ऐसी है जो केवल औरतों द्वारा बनाई जाती रही है। पीढ़ी–दर–पीढ़ी माँ ने अपनी बेटी को यह कला सिखाई है।

प्रस्तुत चित्र में जल देवी को दिखाया गया है जो किसी जल के जन्तु पर विराजमान है। इससे यह आभास होता है कि 'जल–देवी' बहुत शक्तिशाली है। जल के जन्तु उसके अधीन है। देवी की चार भुजाएं दिखाई गईं हैं जिसमें दो में कमल का पुष्प है तथा अन्य दो भुजाओं में शंख एवं चक्र दिखाया गया है। देवी की पृष्ठभूमि में फूल, पत्ते, बेल आदि दिखाए गए हैं। चित्र में लाल–पीला–नीला रंग प्रयोग किया गया है। चारों ओर काले रंग से बाह्य रेखा खींची गई है। ये रेखाएं कहीं–कहीं दोहरी भी बनाई गई हैं जिससे एक सफेद बाह्य रेखा (outline) स्वतः बन जाती है। यही सफेद रेखा एवं दोहरी काली रेखा खींचना इस चित्र की विशेषता है।

चटक रंग योजना के कारण चित्र बहुत आकर्षक बन गया है। ज़्यादातर आलेखन सीधी–खड़ी रेखाओं से भरकर बनाए गए हैं। चित्र के बिल्कुल मध्य में देवी का चित्र बना है व उनके पीछे बनाई गई उनकी ओढ़नी एवं उसको संतुलित करता हुआ जंतु का शरीर आकर्षण के केन्द्र बन गए हैं। नाक के साथ मिले हुए होंठ और गोल–बड़ी–सी ठुड्डी एवं आंख बनाना इस लोक कला की विशेषता है।

पाठगत प्रश्न (14.6)

प्रश्नों के उत्तर दो:

1. मिथिला का यह चित्र किस देवी का बना है?
2. देवी की भुजाओं में क्या–क्या दिखाया गया है?
3. चित्र की पृष्ठभूमि किससे बनी है?
4. देवी की ओढ़नी का रंग कौन सा है?

14.7 सारांश

भारत के विभिन्न प्रदेशों में लोककला की परम्परा विविध साधनों द्वारा बनाई जाती है। लोककला एक पारम्परिक कला है। लोक कलाकार की कला शिक्षा अपने परिवार से प्राप्त होती है। भारत जैसे विशाल देश में कई सामाजिक तथा धार्मिक रीति–रिवाज हैं, जिनका प्रभाव लोककला पर प्रकट होता है। लगभग हर प्रदेश के हर जिले में नई शैली दिखाई देती है। कलाकार अपने घर के आंगन–दीवार तथा फर्श को चित्र बना कर सजाते हैं। आजकल के लोक कलाकारों ने कागज़ पर अपनी शैली के चित्र बनाकर देश–विदेश में काफी नाम कमाया है।

14.8 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1 (1) बंगाल,
(2) सपाट,
(3) लाल,
(4) कुंडल,
(5) कान

14.2 (1) मासुलीपटनम, श्री कला हस्ती
(2) बाटिक, छपाई
(3) पारम्परिक भारतीय
(4) शाखा, प्रशाखायें

14.3 (1) सांप एवं बंदर
(2) त्रिभुज
(3) जिव्या–सोमा–मासे
(4) सफेद

14.4 (1) पूजा त्यौहार, योद्धा, सवार, राजदरवार
(2) लाल, पीला, हरा, काला
(3) पारम्परिक वेशभूषा
(4) ऊँट, घोड़ा, हाथी
(5) सरल, आनुपातिक रूप

14.5 (1) जलदेवी
(2) कमल के फूल, शंख, चक्र
(3) फूल, पत्ती, बेल
(4) लाल

14.9 माडल प्रश्न

(1) किन किन लोक कलाओं में देवी के चित्र बनाए गए हैं।

(2) लोक कलाओं को बनाने में प्रयुक्त साधन–सामग्री पर एक नोट लिखें।

(3) लोक कलाओं में वनस्पति एवं पशु जगत का भी चित्रण हुआ है, अपने विचार लिखो।